आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 10 अंक : 6 फरवरी, 2023 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

74 वें गणतंत्र दिवस पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग द्वारा दिये गये उद्बोधन के अंश

आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आज देश के 74वें गणतंत्र दिवस के सुअवसर पर आप सभी को हार्दिक बधाई एवं मंगल कामनाएं। साथियों, हमारा संविधान हमें हमारे अधिकारों के साथ–साथ कर्त्तव्यों का बोध भी करवाता है। हमें अपने महान संविधान को सर्वोपरी मानते हुए अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए। देश की अखण्डता को अक्षुण्य बनाये रखते हुए सर्वधर्म सम्मान, धर्म निरपेक्षता एवं राष्ट्र विकास की भावना को दिल में जागृत रखना होगा। हमें हमारे प्रत्येक कार्य का निर्वहन जन व समाज कल्याण, पशुकल्याण एवं विश्व कल्याण की भावना से करना चाहिए। हमें संविधान में निहित नीति निर्धारक तत्वों को ज़हन में रखते हुए हमारी संस्कृति, विरासत एवं देश की अखण्डता को अक्षुण रखने का संकल्प लेना चाहिए। कृषि एवं पशुचिकित्सा में नई तकनीकों एवं शोधो के माध्यम से समस्त कृषकों एवं पशुपालकों को समृद्ध बनाते हुए देश की उन्नति एवं विकास में सार्थक योगदान देना चाहिए। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2022–23 की बजट घोषणा के तहत तीन वेटरनरी विश्वविद्यालय के अर्न्तगत भरतपुर, कोटपूतली एवं मलसीसर (मण्डावा) झुंझूनू में नये पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय खोले जाने के लिए घोषणा की है जिसके उपरांत विश्वविद्यालय का कार्य क्षेत्र और अधिक व्यापक हो गया है। राज्य सरकार की अपेक्षा, विश्वास एवं उम्मीदों पर खरा उतरते हुए राज्य में पशु चिकित्सा विज्ञान शिक्षा में गुणात्मक सुधार तथा पशुपालकों की आय में अपेक्षित वृद्धि प्रभावी प्रसार सेवाओं के माध्यम से कराये जाने की चुनौती हम सभी के सामने है जिस पर हमें प्रभावी कार्यवाही करते हुए खरा उतरने का प्रयास करना होगा। माननीय राज्यपाल श्री कलराज मिश्र एवं माननीय कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री लालचन्द जी कटारिया द्वारा लोकार्पित विश्वविद्यालय को नवनिर्मित संविधान पार्क आम जनता, स्कूली विद्यार्थियों एवं बच्चों के लिए हमेशा खुला रहता है ताकि युवाओं एवं आम नागरिकों में संविधान की मूलसंरचना, संवैधानिक अधिकारों एवं कर्तव्यों के साथ साथ सामाजिक उत्तरदायित्व एवं राष्ट्र भावना की चेतना जागृत हो सके। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा अनुसूचित जाति उप–परियोजना के अंतर्गत विश्वविद्यालय के चार पशु विज्ञान केन्द्रों पर बैकयार्ड मुर्गीपालन एवं बकरी पालन की प्रदर्शन इकाईयों को स्थापित करने के लिए 132 लाख रूपये की परियोजना स्वीकृत की गई है। इस परियोजना के तहत पशु विज्ञान केन्द्रों पर प्रदर्शन इकाईयों की स्थापना करके पशुपालकों को रोजगारन्मुखी बनाने के लिए प्रशिक्षण प्रदान किये जायेंगे। प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) को पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरनसर में इन्ट्रीग्रेटेड फार्मिंग सिस्टम के तहत एक मॉडल बनाने के लिए परियोजना प्रस्तुत की गई थी। बड़े हर्ष का विषय है कि नाबार्ड द्वारा इस परियोजना को एक मॉडल के रूप में विकसित करने के लिए 27.53 लाख रूपये की स्वीकृति जारी कर दी गई है। हमारे लिए गौरव की बात है कि पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर की पशुजन्य रोग नियंत्रण एवं निगरानी केन्द्र को भारत सरकार के फिशरीज, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय ने पशुओं में लम्पी स्किन बीमारी की जांच एवं अनुसंधान के लिए अधिकृत किया है। राज्य सरकार द्वारा तीन एम्ब्रियो ट्रांसफर टेक्नोलॉजी प्रयोगशालाएं वेटरनरी विश्वविद्यालय हेतु स्वीकृत की गई है। आगामी एक वर्ष में विश्वविद्यालय से अच्छी गुणवत्ता के भ्रूण देशी गायों में स्थापित करने के लिए उपलब्ध कराने का लक्ष्य राज्य सरकार द्वारा विश्वविद्यालय हेतु निर्धारित किया गया हैं। नई शिक्षा नीति –2020 के अन्तर्गत नये सर्टिफिकेट, डिप्लोमा व डिग्री प्रोग्राम प्रारंभ करना है जो कि रोजगारोन्मुख हों तथा युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रेरित करे। शिक्षा एवं शोध में गुणात्मक सुधार आवश्यक है ताकि हमारे विद्यार्थी और अधिक दक्ष हों तथा उनमें अधिक आत्मविश्वास हो। छात्र, कर्मचारी व शिक्षक तीनों से मिलकर ही विश्वविद्यालय बनता है। यही हमारा संगठन हमारे विश्वविद्यालय को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण है क्योंकि संगठन में ही शक्ति है अतः हम सबको एक साथ मिलकर शैक्षणिक, शोध एवं प्रसार कार्यों को श्रेष्ठ बनाते हुए राजुवास को उत्कृष्ठ स्थान पर पर पहुंचाने का संकल्प करना चाहिये। आज के दिन विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों, कार्यरत कर्मचारियों, शिक्षकों एवं अधिकारियों को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों एवं सेवाओं के लिए बहुत बहुत बधाई। देश के संविधान निर्माता एवं अमर शहीदो को पुण्य स्मरण करते हुए उन्हें अपनी भावभीनीं श्रद्धांजली अर्पित करते हुए गणतंत्र दिवस की आप सभी को पुनः एक बार हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देता हूँ।

जय हिन्द!

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

गणतंत्र दिवस समारोह
कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग द्वारा ध्वजारोहण और सलामी

गणतंत्र दिवस के 74 वें समारोह में वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने विश्वविद्यालय के प्रांगण में ध्वजारोहण कर सलामी दी। समारोह में विद्यार्थियों और कर्मिकों ने देशभक्ति से ओतप्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रम की मनमोहक प्रस्तुतियां दी। इस अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गर्ग ने अपने सम्बोधन में कहा कि वीर सपूतों के बलिदान और त्याग से आजादी हासिल हुई है। हमें अपने संवैधानिक दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वाह करते हुए देश की एकता, अखंडता और सर्वांगीण विकास के लिए पूरी लगन, निष्ठा और मेहनत से जुटना है। उन्होंने कहा कि कृषि और पशुचिकित्सा में नई तकनीकों और शोध के माध्यम से देश की उन्नति और विकास में सार्थक योगदान देना है। कुलपति ने आई.सी.ए.आर. प्री पी.जी. परीक्षा में सफलता और एन.सी.सी. घुड़सवारी में पदक हासिल किए जाने पर विद्यार्थियों को बधाई दी।

विश्वविद्यालय की प्रमुख बैठको का आयोजन

ऑफिसर काउंसिल

वेटरनरी विश्वविद्यालय की ऑफिर्सस काउंसिल की पांचवी बैठक कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में 7 जनवरी को आयोजित की गई। कुलपति प्रो. गर्ग ने विश्वविद्यालय के सभी फैकल्टी सदस्यों को नवगठित राजुवास एल्यूमिनाइ एसोशिएसन की बधाई दी एवं इसमें अधिक से अधिक स्नातकोत्तर एवं इंर्टशिप छात्रों के नामांकन का निर्देश दिया। बैठक में शैक्षणिक सुधार हेतु परीक्षाओं के दौरान पर्यवेक्षकों की नियुक्ति, विद्यार्थियों को शोध कार्य हेतु आवश्यक सुविधाओं को उपलब्ध करवाने एवं विद्यार्थियों के हॉस्टल में सुविधाओं के विस्तार पर दिशा निर्देश प्रदान किये गये। इसके अतिरिक्त राज्य सरकार द्वारा कर्मचारियों हेतु जारी आर.जी.एच.एस. योजना को विश्वविद्यालय कर्मचारियों हेतु शीघ्र लागू करने हेतु निर्देश प्रदान किये। अधिष्ठाता एवं संकायाध्यक्ष प्रो. ए.पी. सिंह ने बैठक में एजेण्डा प्रस्तुत किये।

अकादमिक परिषद्

वेटरनरी विश्वविद्यालय की 23वीं अकादमिक परिषद् की बैठक कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में 16 जनवरी को आयोजित की गई। बैठक में कुलपति प्रो. गर्ग ने अकादमिक परिषद् के सभी सदस्यों का स्वागत किया एवं गत बैठक के सभी बिन्दुओं पर विचार विमर्श करते हुए कार्य अनुपालना को सर्वसम्मति से अनुमोदित किया गया। बैठक में कुलसचिव अरूण प्रकाश शर्मा द्वारा बैठक में एजेण्डे प्रस्तुत किया गया तथा अकादमिक परिषद् के सदस्यों द्वारा विभिन्न एजेन्डों का अनुमोदन किया गया। बैठक में नई शिक्षा नीति के तहत विश्वविद्यालय में एक वर्षीय नये डिप्लोमा कार्यक्रम एवं छः माह के सर्टिफिकेट प्रोग्राम शुरू करने के सुझाव पर विचार विमर्श किया गया। इसके अतिरिक्त बैठक में विश्वविद्यालय के शिक्षकों का गाइड़ हेतु एक्रीडीटेशन, बी. एस.एम.ए.–2021 के तहत विभिन्न विभागों के नामकरण आदि मुद्दों पर विचार विमर्श एवं अनुमोदन किये गये।

विश्वविद्यालय प्रबंध मण्डल

वेटरनरी विश्वविद्यालय की 28वीं प्रबंध मण्डल की बैठक 18 जनवरी को कुलपति प्रो. सतीश के गर्ग की अध्यक्षता में आयोजित की गई। प्रदेश के वेटरनरी महाविद्यालयों में वेटरनरी स्नातक पाठ्यक्रम के लिए प्रवेश आगामी सत्र से नीट के माध्यम से किये जाऐंगे। पी.जी. एवं पीएच.डी. पाठ्यक्रम में अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों के प्रवेश के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली को प्रस्ताव प्रस्तुत किया जाएगा। वेटरनरी होम्योपैथिक मेडिसिन के क्षेत्र मे फील्ड पशुचिकित्सकों हेतु प्रशिक्षण एवं सर्टीफिकेट पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने की सहमती इस बैठक में व्यक्त कर गई। प्रबन्ध मण्डल ने विश्वविद्यालय में कैरियर एडवांसमेंट के अन्तर्गत विश्वविद्यालय के चार शिक्षको के पदोन्नत करने का अनुमोदन किया गया। विश्वविद्यालय के सेवानिवृत व पेन्शनर शिक्षकों एवं कर्मचारियों के लिए राज्य सरकार की स्वास्थ्य योजना (आर.जी.एच.एस.) की औपचारिकता को पूर्ण कर उसे शीघ्र लागू करने के निर्णय का अनुमोदन भी किया गया। कुलसचिव अरूण प्रकाश शर्मा द्वारा एजेण्डे प्रस्तुत किए गए। बैठक में प्रबंध मण्डल के सदस्य प्रो. ए.के. गहलोत (संस्थापक एवं पूर्व कुलपति), प्रो. पी.के. शुक्ला (मथुरा), श्रीमती कृष्णा सोलंकी (जयपुर), श्री पुरखाराम (प्रगतिशील पशुपालक), डॉ. ओम प्रकाश (आर.सी.डी.एफ. प्रतिनिधि), डॉ. विरेन्द्र नेत्रा (संयुक्त निदेशक, पशुपालन विभाग, बीकानेर), डॉ. गीता बेनिवाल (उपनिदेशक पशुपालन), प्रो. ए.पी. सिंह, डॉ. हेमन्त दाधीच एवं वित्त नियन्त्रक बनवारी लाल सर्वा उपस्थित रहे।

अंतर्राष्ट्रीय ऊंट उत्सव पर विश्वविद्यालय प्रदर्शनी का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय ऊंट उत्सव (13–15 जनवरी, 2023) के तहत बीकानेर में कृषि सबंद्व समस्त संस्थानों/केन्द्रों/विश्वविद्यालयों आदि की उन्नत वैज्ञानिक तकनीकी सबंधी जानकारी पर्यटकों व आमजन के समक्ष प्रदर्शित करने के प्रयोजनार्थ दिनांक 14 जनवरी, 2023 को राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर में प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास द्वारा विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में पशुचिकित्सा की आधुनिक तकनीक व नवाचारों तथा पशुपालन कि वैज्ञानिक तौर–तरीको को माडॅल, चार्टस, पैनल्स, रगीन चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया गया साथ ही पशुपोषण की उन्नत तकनीकों जैसे संतुलित पशु आहार बनाना, अजोला उत्पादन, यूरिया मोलासेस मिनरल ब्लॉक बनाने की विधि व मॉडल का सजीव प्रदर्शन भी किया गया। विश्वविद्यालय की प्रदर्शनी का अवलोकन प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग, कुलपति, राजुवास, बीकानेर, श्रीमान भगवती प्रसाद कलाल, जिला कलक्टर, बीकानेर सहित विभिन्न जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों द्वारा अवलोकन कर सराहना की। इस अवसर पर प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास भी मौजूद रहें।

कृषि महोत्सव, कोटा में राजुवास प्रदर्शनी का आयोजन

दशहरा मेदान, कोटा मे दिनांक 24–25 जनवरी, 2023 को आयोजित कृषि महोत्सव कार्यक्रम के तहत निदेशालय प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर द्वारा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। माननीय अध्यक्ष, लोकसभा श्री ओम बिरला एंव केंद्रीय कृषि एंव विकास कल्याण मंत्री, भारत सरकार श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने इस मेले का उद्घाटन किया। इस प्रदर्शनी में विश्वविद्यालय द्वारा प्रायोजित विभिन्न गतिविधियों को पोस्टरर्स व मॉडल्स के माध्यम से प्रदर्शित किया। निदेशक प्रसार शिक्षा राजुवास, बीकानेर प्रो. (डॉ) राजेश कुमार धूड़िया के निर्देशन मे डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा, सहायक आचार्य एंव डॉ सीमा मीणा, टीचिंग एसोसिएट प्रदर्शनी के आयोजन मे समन्वयक की भूमिका निभाई। राजुवास प्रदर्शनी के अन्तर्गत पशुपोषण की उन्नत तकनीकों जैसे संतुलित पशु आहार बनाना, अजोला उत्पादन, यूरिया मोलासेस मिनरल ब्लॉक बनाने की विधि व मॉडल का सजीव प्रदर्शन व पशुपालन के विभिन्न आयामो पर प्रकाशित प्रकाशनो का वितरण भी पशुपालको को किया गया।

राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन

राष्ट्रीय युवा दिवस पर 12 जनवरी को वेटरनरी विश्वविद्यालय में स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर स्वामी विवेकानंद जी की मूर्ति स्थल पर श्री स्वामी संवित् विमार्शनन्द गिरी महाराज, अधिष्ठाता, लालेश्वर महादेव मन्दिर, शिवबाड़ी ने मूर्ति पर माल्यार्पण कर कहा कि युवाओं को गतिशील, मतिशील एवं श्रुतिशील होना चाहिए। हम सभी को चीर युवा होना चाहिए जो कि गतिमान हो, प्रयत्नशिल हो, जिज्ञासु हो, परोपकारी एवं ओजस्वी हो। उन्होंने विद्यार्थियों को बाहरी दिखावे एवं आधुनिकता से दूर रहते हुए चेतना, कर्तव्य, जिज्ञासा एवं देश प्रेम के गुणो को आत्मसात करने हेतु कहा। कार्यकारी अधिष्ठाता, वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर, प्रो. राजेश कुमार धूड़िया व निदेशक मानव संसाधन विकास प्रो. बृज नन्दन श्रृंगी ने स्वामी विवेकान्द के जीवन घटनाओं का वृतान्त किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने दिया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के फैकल्टी सदस्य, कर्मचारी और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

आत्मा योजनान्तर्गत गोबर–गौमूत्र प्रसंस्करण पर संस्थागत प्रशिक्षण

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं उपनिदेशक कृषि एवं पदेन परियोजना निदेशक (आत्मा), बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 17–18, 19–20 एवं 23–24 जनवरी, 2023 को **गोबर–गौमूत्र प्रसंस्करण प्रशिक्षण** कार्य योजना के अन्तर्गत दो दिवसीय संस्थागत प्रशिक्षणों का आयोजन प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर में किया गया। उक्त प्रशिक्षणों में बीकानेर पंचायत समिति के 90 पशुपालको एवं किसानों ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने कहा उन्नत गोपालन करके पशुओं का दूध उत्पादन बढाया जा सकता है। इसके साथ ही गोबर–गोमूत्र को प्रसंस्करण कर पशुपालक अपनी आर्थिक उन्नति भी कर सकते है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में डॉ. दीपिका धूड़िया, डॉ. राहुल पाल सिंह, डॉ. प्रमोद धतरवाल, डॉ. मनोहर सैन, डॉ. राजेश नेहरा, डॉ. रजनी अरोड़ा, डॉ. पलक गुप्ता, डॉ. चांदनी जावा एवं डॉ. रेखा लोहिया द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किए गये।

राजुवास 'कैलेण्डर –2023' का लोकार्पण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने 2 जनवरी को वेटरनरी विश्वविद्यालय के जनसम्पर्क प्रकोष्ठ द्वारा तैयार "राजुवास कैलेण्डर–2023" का लोकार्पण किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने बताया कि वेटरनरी विश्वविद्यालय का बहुरंगी राजुवास कैलेण्डर प्रति वर्ष जारी किया जाता है। इस कैलेण्डर में वेटरनरी विश्वविद्यालय की गतिविधियों और कार्यक्रमों का दिग्दर्शन किया गया है। जनसम्पर्क प्रकोष्ठ के समन्वयक व निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने इस कैलेण्डा संपादन व संकलन किया है।

पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण पर जागरुकता

वेटरनरी विश्वविद्यालय के जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्योगिकी केंद्र, राजुवास द्वारा बीकानेर पब्लिक स्कूल, करणी नगर, बीकानेर में छात्र छात्राओं हेतु अपशिष्ट निस्तारण जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्यौगिकी केंद्र की मुख्य अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने बताया कि मनुष्य में होने वाली अधिकतर बीमारियां संक्रामक प्रकार की होती है अतः पशु जैव चिकित्सकी अपशिष्ट उचित निस्तारण एवं प्रबंधन से हम ना केवल पशुओं को अपितु मनुष्यों को भी इस संक्रामक बीमारियों के प्रकोप से बचा सकते है एवं वातावरण को भी दूषित होने से बचा सकते है, अतः इस हेतु आम नागरिकों में जागरूकता की आवश्यकता है। जागरूकता कार्यक्रम में केन्द्र के सह अन्वेषक डॉ. मनोहर सैन ने जैविकीय अपशिष्ट के पृथक्करण व भंडारण पर एवं डॉ. देवेन्द्र चौधरी ने जैव चिकित्सा अपशिष्ट के प्रबंधन एवं निस्तारण विषय पर व्याख्यान दिये। इस कार्यक्रम में बीकानेर पब्लिक स्कूल की प्रधानाध्यापिका शिल्पी खत्री व अन्य शिक्षक गण उपस्थित रहे।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गाढवाला में प्रोढ साक्षरता पर संगोष्ठी

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए ग्राम गाढवाला के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में 24 जनवरी को प्रोढ साक्षरता में विद्यार्थियों की भूमिका विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रवण चौधरी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए साक्षर होना बहुत जरूरी है और उसमें विद्यार्थियों को अहम भूमिका हो सकती है। यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा एवं विद्यालय के व्याख्याता अर्जुन सिंह ने विद्यार्थियों को प्रेरित किया।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–फरवरी, 2023

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
लंगडा बुखार	गाय, भैंस	–	–	–	अलवर झुंझुनू, नागौर
बबोसिओसिस	गाय	–	–	–	अलवर
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	–	बाड़मेर, बीकानेर, चूरू, दौसा, धौलपुर, जैसलमेर, जालौर, झालावाड़, जोधपुर, नागौर, पाली, सीकर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	हनुमानगढ़	–	–	–
खुरपका–मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	जयपुर, उदयपुर	अलवर, झुंझुनू, गंगानगर, उदयपुर	धौलपुर	बांसवाड़ा, भरतपुर, दौसा, डूंगरपुर, हनुमानगढ़, झालावाड़, करौली, राजसमन्द, सीकर
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	दौसा, करौली	अजमेर, भरतपुर, सवाई माधोपुर	–	अलवर, बांसवाड़ा, बारा, भीलवाड़ा, बीकोनर, बूंदी, चित्तौड़गढ, चूरू, धोलपुर, डूंगरपुर, गंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, जैसलमेर, जालौर, झालावाड़, झुंझुनू, कोटा, नागौर, पाली, प्रतापगढ़, राजसमन्द, सीकर, सिरोही, टोंक, उदयपुर
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	जैसलमेर	–	–	अजमेर, अलवर, बांसवाड़ा, बाड़मेर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, चूरू, डूंगरगढ़, गंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, जालौर, झुंझुनू, नागौर, पाली, राजसमन्द, सीकर, सिरोही, टोंक, उदयपुर
माता रोग	भेड़, बकरी	हनुमानगढ	–	–	–
थीलेरिओसिस	गाय के बछड़े	–	–	–	अलवर, भरतपुर, डूंगरपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. ए.पी. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं
डॉ. जे.पी. कछावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 10, 11, 12, 17 एवं 18 जनवरी को गांव कल्याणपुरा, गुंसाईसर, रोडसावटसर,बीरमसर एवं ठाठलिया गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण तथा 30–31 जनवरी को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 138 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 5, 10, 13 एवं 18 जनवरी को ऑनलाईन एवं 25 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 20–21 जनवरी को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 252 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 21 जनवरी को गांव हुडास में एवं 9, 16, 23 एवं 31 जनवरी को ऑनलाईन एवं केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण तथा 2–3 एवं 5–6 जनवरी को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरो में 190 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 6, 7, 9, 12, 25 एवं 27 जनवरी को गांव खोहरी, गिरसे, सहराई, श्योरावली, बहताना एवं सेन्हती गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 130 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 4, 10, 24 एवं 27 जनवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण तथा 7 जनवरी को गांव घाटी में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 111 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा (चित्तौड़गढ)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा द्वारा 10, 16, 24 एवं 31 जनवरी को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 135 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 5, 10, 13, 18, 21 एवं 30 जनवरी को गांव महूरी, बदरिका, मोरोली का पुरा, भोलपुरा, सिंघोरा का पुरा एवं फोन्दे का पुरा गांवों में तथा 25 जनवरी को केन्द्र परिसर में एवं 16–17, 23–24 एवं 27–28 जनवरी को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 300 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 6, 9 एवं 18 जनवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर दिनांक 23 जनवरी को केन्द्र परिसर में तथा 20–21 एवं 30–31 जनवरी को आत्मा योजनान्तर्गत आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 188 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 16–17 एवं 18–19 जनवरी को आत्मा योजनान्तर्गत आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 60 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 5, 6, 11, 12 एवं 13 जनवरी को गांव गोरधनपुरा, झालीपुरा, ब्रजेशपुरा, अर्जुनपुरा एवं सोगरिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा दिनांक 17–18 जनवरी को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 154 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 9 जनवरी को गांव मांडवा में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर में 22 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 9, 11, 13 एवं 18 जनवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण तथा दिनांक 19–20, 24–25 एवं 30–31 जनवरी को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 188 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा दिनांक 6, 7, 17, 18 एवं 21 जनवरी को गांव मुकरवाडा, धुवालिया, नाडा फला, वगत फला एवं नवलश्याम गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 150 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 10, 16, 21, 30 एवं 31 जनवरी को गांव माचवा झोटवाडा, सरनाचौड, दीपपुरा रेनवाल, करनसर रेनवाल एवं खेडी रेनवाल में एक दिवसीय आफॅलाईन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 27–28 जनवरी को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 146 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालोर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालोर द्वारा 7, 10, 25 एवं 31 जनवरी को गांव बीबलसर, रामसीन, आकोली एवं भीमपुरा गांवो में तथा दिनांक 3 जनवरी को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 103पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 5, 9, 13, 18, 25 एवं 30 जनवरी को गांव बरवाली, गुडिया, जसाना, चक 23 एनटीआर, भीरूसरी एवं नाहरावाली ढाणी में एक दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 125 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

पशुशाला में जैव सुरक्षा का महत्व

जैव सुरक्षा का तात्पर्य मनुष्यों एवं पशु–पक्षियों की सुरक्षा से है जिसको अपनाकर हम मनुष्यों एवं पशु–पक्षियों को बीमारी पैदा करने वाले कारकों जैसे जीवाणु, विषाणु, कवक इत्यादि से बचा सकते हैं। जैव सुरक्षा का उद्देश्य बीमारी पैदा करने वाले कारकों को पशुशाला में प्रवेश से रोकना या उनकी संख्या को कम करना है जिससे मुर्गीपालक अथवा पशुपालक अपने मुर्गी फार्म में या पशुशाला में अच्छी गुणवत्ता की मुर्गियां तथा पशु रख कर पशुपालक अपने पशुओं को बीमारियों से होने वाले नुकसान को कम करके अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं।

जैव सुरक्षा कैसे करें:

- नये पशु खरीदने से पहले उनके खरीदने के स्त्रोत के बारे में पूरी जानकारी लेनी चाहिए तथा पशु का प्रयोगशाला परीक्षण भी करवाना चाहिए ताकि अगर पशु को पहले से कोई रोग हो तो उसका पता चल सके तथा उसका इलाज समय पर करवाया जा सके। यदि प्रारंभिक परीक्षण कोई वजह से ना किया जा सके तो नये पशुओं को पुराने पशुओं से अलग रखें तथा उनका दुग्ध दोहन तथा चारा–पानी अन्य दुधारू पशुओं के बाद करें तथा उनके दूध की प्रयोगशाला में जांच भी करवाएं उसके बाद ही उस दूध को प्रयोग में लें।
- फार्म में बाहर से आने वाले लोग नई बीमारियों के संवाहक का कार्य करते हैं तथा पशुशाला में मौजूदा संक्रमण को भी बढ़ावा देने में सहायक होते हैं इसलिए नये खरीदे गये पशुओं को कुछ दिनों के लिए संगरोध गृह में रखना चाहिए। संगरोध गृह में पशु को रखने की आदर्श अवधि 21 से 30 दिन की होती है इसलिए संगरोध गृह में रहने वाले पशुओं का खाना–पीना तथा दूसरे पशुओं से सम्पर्क न्यूनतम होना चाहिए।
- घातक बीमारियां जैसे गलघोंटू, मुंहपका–खुरपका रोग आदि से बचाव के लिए पशुधन का सही समय पर पशुचिकित्सक की सलाह से टीकाकरण अवश्य करवायें टीकाकरण नहीं करवाने से पशुओं की उत्पादन क्षमता प्रभावित होती है तथा बीमारी का सही समय पर इलाज नहीं करवाने के कारण कई बार पशु की जान भी जा सकती है।
- बाहर से आने वाले लोगों को पशु आवास तथा चारा क्षेत्र में जाने की मनाही होनी चाहिए तथा पशुशाला के प्रवेश स्थल पर लोगों को प्रवेश करने से पहले हाथ–पैर कीटाणुनाशक घोल से धोने के लिए प्रेरित करें तथा फार्म पर रबड़ या एक बार के उपयोग लेने हेतु जूते भी होने चाहिए।
- रोगी पशुओं को स्वस्थ पशुओं से बीमारी एवं उपचार के दौरान अलग रखें तथा दूध दोहने एवं बीमार पशुओं को हाथ लगाने से पहले तथा बाद में कीटाणुनाशक घोल से हाथ धोने चाहिए।
- फार्म पर अन्य पशु–पक्षियों के आवागमन पर नियंत्रण रखें तथा पशुओं को रखने की जगह पर वाहनों की आवाजाही वर्जित करें।
- फार्म में काम आने वाले उपकरणों, दूध दोहने के बर्तनों, पशुशाला में काम करने वाले लोगों के कपड़े आदि को साफ–सुथरा रखें।
- पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि पशुओं का प्राकृतिक गर्भाधान की बजाय कृत्रिम गर्भाधान करवायें ताकि एक पशु से दूसरे पशु में होने वाले रोगों को फैलने से रोका जा सके।
- मृत पशुओं से संदूषण एवं रोग प्रसार के खतरे को कम करने के लिए मृत्यु के 48 घंटे के भीतर पशु के शव सहित उसके बिछावन, चारे एवं गोबर का निस्तारण कर देना चाहिए। शव उठाने के बाद मृत पशु की जगह को साफ एवं कीटाणु रहित करना चाहिए।

निष्कर्ष : पशुपालन एवं मुर्गीपालन में जैव सुरक्षा का बहुत महत्व है जिसको अपनाकर हम पशु–पक्षियों को घातक बीमारियों से बचा सकते हैं जैव सुरक्षा खेतों में पशु–पक्षियों को दवा देने के लिए बेहतर माहौल प्रदान करता है, इसके अलावा जैव सुरक्षा की उपस्थिति में पशु–पक्षियों का टीकाकरण भी अधिक फायदेमंद हो जाता है। किसान बीमारी पैदा करने वाले जीवों के प्रसार को रोकने के लिए सबसे कम लागत वाले प्रभावी साधन के रूप में जैव सुरक्षा को अपना सकते हैं।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

घासीलाल को भैंस तथा गाय पालन आया रास

घासीलाल पुत्र श्री बजरंग लाल ग्राम– भगवानपुरा, तहसील मालपुरा जिला टोंक के निवासी है। घासीलाल कृषि के साथ–साथ पशुपालन व्यवसाय को सीमित स्तर पर पिछले काफी वर्षो से करते आ रहे हैं। पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षणों में भागीदारी करते रहते हैं। पशु विज्ञान केन्द्र द्वारा पशुपालन से सम्बन्धित दी जाने वाली विभिन्न जानकारियों को अपनाते हुए इन्होंने गत तीन वर्ष पूर्व उन्नत नस्ल के पशुओं को पशुशाला में शामिल किया। घासीलाल के पास 15 बीघा कृषि भूमि है। इन्होंने पशुपालन सिर्फ 2 भैंस से प्रारम्भ किया था। पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक के वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार पशुपालन को मुख्य व्यवसाय मानकर पशुओं की संख्या में वृद्वि की तथा वर्तमान में इनके पास 8 भैंस, 3 गाय तथा 10 छोटे पशु है तथा पशुओं की संख्या ओर अधिक बढ़ाना चाहते हैं। भैंस की मूर्रा व गाय की गिर नस्ल का यह वैज्ञानिक तरीके से पालन कर रहे हैं जिससे प्रतिदिन लगभग 45 लीटर दुग्ध का उत्पादन होता है। साथ ही पशुओं के लिए हरे चारे की आपूर्ति स्वंय के खेत से कर लेते हैं, इनके पास चारा काटने की मशीन भी है। इन्होंने पशुशाला में पशुओं के लिए छायादार शेड तथा पंखों की भी व्यवस्था कर रखी है। घासीलाल अपने पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान को अधिक महत्व देते हैं। घासीलाल प्रतिवर्ष लगभग 5.00 लाख रू. का दूध बेचकर इससे अच्छा मुनाफा कमा लेते हैं, साथ ही गोबर का उपयोग जैविक खाद के रूप में कर रहे हैं। घासीलाल पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक के वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार पशुओं के लिए संतुलित आहार, टीकाकरण, कर्मीनाशक दवा, खनिज लवण तथा नमक आदि का उपयोग कर रहे हैं तथा केन्द्र के वैज्ञानिकों से पशुओं की बीमारियों के बारे में समय–समय पर विचार–विमर्श कर उनका निदान करते रहते हैं। यह अपने व्यवसाय से बहुत खुश है। यह युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्त्रोत भी है। घासीलाल अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार के सदस्यों के साथ–साथ पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक को देते हैं।

सम्पर्क-घासीलाल (मो.न. 8696587300), गांव- भगवानपुरा (टोंक)

स्वच्छ दूध उत्पादनः क्यों और कैसे करें

गांवों के अधिकतर परिवारों में दुधारू पशु गाय, भैंस पाले जाते हैं। हालांकि दुधारू पशु पालना एक आम बात है परन्तु स्वच्छ दुग्ध उत्पादन अलग बात है। स्वच्छ दुग्ध उत्पादन से हम दूध को जल्दी खराब होने से बचा सकते हैं जिनका सीधा सम्बन्ध आर्थिक लाभ से है अतः पशुपालकों और किसानों को स्वच्छ दुग्ध उत्पादन करना चाहिए। स्वच्छ दूध का अर्थ दूध में बाहरी पदार्थो जैसे धूल, मिट्टी, गोबर, बाल,मच्छर–मक्खी आदि के न होने से ही नहीं बल्कि बीमारी फैलाने वाले जीवाणुओं, विषाणुओं, फंगस आदि की भी अनुपस्थिति से भी होता है। स्वच्छ दूध उत्पादन के लिए बहुत सी बाते हैं जैसे वातावरण व स्वच्छ दुग्धशाला, साफ बर्तन, स्वच्छ एवं स्वस्थ पशु, स्वच्छ दूध दुहने का तरीका एवं स्वच्छ दूधिया होना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त दूध दवाइयों के बचे हुए अंश, कीटाणुओं आदि की सुरक्षा के लिए प्रयुक्त रसायनों के अवशेष, हारमोन के अवशेष से भी मुक्त हो।

पशुपालकों के लिए स्वच्छ दुग्ध उत्पादन क्यों जरूरी हैः स्वच्छ दूध मानव स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित होता है, अर्थात इसके सेवन से बीमारियों का कोई खतरा नहीं रहता। दूध से फैलने वाली बीमारियों में टी.बी., टाइफाईड, पैरा टाइफाईड, अन्डूलेन्टिंग फीवर, पेचिश तथा गैस्ट्रोइन्टेराइटिस प्रमुख हैं। इनमें से कुछ के जीवाणु दुधारू पशु के थन से सीधे आ जाते हैं तथा कुछ दूध, मल–मूत्र के प्रदूषण द्वारा तथा कुछ दूध निकालने वाले व्यक्ति द्वारा दूध में आते हैं। दूध के द्वारा अनेक जूनोटिक बीमारियां जैसे ब्रुसेलोसिस आदि हो जाते हैं।

दूध दुहाई करने के लिए बर्तन कैसा होः दूध दुहने का बर्तन स्टेनलेस स्टील का होना अच्छा है। अन्यथा एल्यूमीनियम या गैलवेनाइज्ड शीट का हो। पीतल और तांबे का बर्तन बिलकुल इस्तेमाल न करें। खुली बाल्टी के स्थान पर गुम्बदाकार छत वाली बाल्टी में दूध दुहना चाहिए, क्योंकि जीवाणु वातावरण, बाहरी गन्दगी तथा पशु के शरीर के बाल नहीं गिरते हैं। दूध दूहने के लिए साफ बर्तन का उपयोग करना चाहिए। गन्दे बर्तन बीमारी फैलाने वाले कीटाणुओं का मुख्य स्त्रोत होते हैं। दूध दुहने के पश्चात बर्तन को साबुन–सर्फ व गर्म पानी से धोना चाहिए। अगर बर्तन राख से साफ करना हो तो बर्तन को दो–तीन बार पानी से अच्छी तरह खंगाल लेना चाहिए। बर्तन को धोकर सुखाना अति–आवश्यक है। साफ बर्तन को पलट कर रखना चाहिए तथा हो सके तो बर्तन को तेज धूप में कम से कम तीन घंटे अवश्य रखें, ताकि वह कीटाणु रहित हो जाए। बर्तन धोने के लिए साफ पानी का ही उपयोग करना चाहिए।

पशुपालकों को दूध दुहने से पहले क्या करना चाहिएः दूध दुहने से पूर्व पशु का पिछला हिस्सा अच्छी तरह धो लें। दूध दुहने से पूर्व थनों को कीटाणुनाशक (एक बाल्टी पानी में एक चुटकी पोटेशियम परमैनगेट) घोल में स्वच्छ कपड़ा डुबोकर पोंछ दें। दूध दुहते समय पशु की पूंछ हिलाने से धूल, मिट्टी या गन्दगी दूध में नहीं गिरे। पशु के थनों का रोज निरीक्षण करें, यदि कोई दरार हो तो उसको साफ करके एन्टिसेप्टिक क्रीम लगा दें, यदि थनों में सूजन हो या मवाद अथवा खून दूध के साथ आ रहा हो तो वह थनैला रोग का सूचक है। अतः तुरन्त पशुचिकित्सक को दिखाएं।

पशुपालकों को स्वच्छ दूध दोहन कैसे करना चाहिएः दूध दुहने से पहले दूध निकालने वाले दूधिया को अपने हाथों को साबुन से अच्छी तरह साफ कर सूखा लेना चाहिए। हाथ के नाखून समय–समय पर काटते रहें, स्वच्छ और साफ कपड़े पहने तथा सिर को टोपी द्वारा ढक कर रखे ताकि कोई बाल आदि दूध में न गिरे। दूध को पूर्ण हस्त (फूल हैंड) विधि द्वारा दुहना चाहिए। दूध की पहली एक–दो धार को स्ट्रिप प्याले में डालना चाहिए ताकि थनैला की बीमारी का पता चल सके। प्रारम्भ के दूध को स्ट्रिप–प्याले में निकालने से जीवाणु भी थन से निकल जाते हैं और बाद में दूध जीवाणु मुक्त हो जाता है। यदि दूध दुहने वाला व्यक्ति किसी बीमारी जैसे–कालरा, टायफाईड या टी.बी. के रोग से ग्रसित है तो बीमारी के कीटाणु दूध द्वारा स्वस्थ व्यक्ति में भी फैल सकता है।

अधिक समय तक दूध का उपयोग करने के लिए दूध का संरक्षण कैसे करें: एल्यूमीनियम या स्टेनलेस स्टील की ढक्कन वाली कैन दूध रखने एवं परिवहन के लिए अच्छी रहती है। दूध का बर्तन यदि ढक्कन युक्त नहीं है तो उसे साफ कपड़े से ढक दें ताकि दूध में धूल, मच्छर–मक्खी आदि न गिरे। दूध को सीधे धूप में नहीं रखें क्योंकि इससे दूध का स्वाद खराब होने का भय रहता है। दूध को ठंडा रखने के लिए बर्तन को ठंडे पानी में रखें तथा ताजे दूध को पहले से रखे दूध में नही मिलायें।

डॉ. नरसीराम गुर्जर, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।

पशुओं में लैंटाना विषाक्तता

लैंटाना कैमारा की मूल श्रेणी मध्य और दक्षिण अमेरिका है हालाँकि, यह दुनिया भर के लगभग 60 उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय देशों में फैल गया है। यह लगभग 200 साल पहले अंग्रेजों द्वारा भारत लाया गया था, जो बाद में आक्रामक रूप से फैल गया। आम लैंटाना उष्ण कटिबंध का एक ऊबड़–खाबड़ सदाबहार झाड़ी है। यह 6 फीट ऊँची और 8 फीट चौड़ाई तक फैल सकती हैं। पत्तियां 2–5 इंच लंबी 1–2 इंच चौड़ी होती हैं तने और पत्तियां खुरदरे बालों से ढकी होती हैं और कुचलने पर एक अप्रिय सुगंध निकलती है। छोटे फूल गुच्छों में होते हैं जो आम तौर पर 1–2 इंच के होते हैं। फूलों का रंग सफेद से पीला, नारंगी से लाल, गुलाबी से लेकर गुलाब तक होता है, इसके अलावा फूल आमतौर पर उम्र के अनुसार रंग बदलते हैं। एक लैंटाना दूर से नारंगी दिख सकता है, लेकिन फूल करीब से सफेद, पीले और लाल दिखाई देते हैं। फल बेरी जैसे होते हैं जो हरे रंग के होते हैं और पकने के बाद गहरे बैंगनी या काले रंग में बदल जाते हैं। हालांकि सभी लैंटाना जहरीले होते हैं, लाल फूलों वाली किस्मों को सबसे जहरीला माना जाता है लैंटाना विषाक्तता से मवेशी, भेड़, बकरी, सूअर और खरगोश प्रभावित होते हैं।

विषाक्तताः चरने वाले जानवरों में लैंटाना से विषाक्तता इसमे पाये जाने वाले सक्रिय पदार्थ पेंटासाइक्लिक ट्राइटरपीनोइड्स से होती है जो लीवर की क्षति और प्रकाश संवेदनशीलता का कारण बनता है।

लक्षणः

- धूप के प्रति त्वचा की अत्यधिक संवेदनशीलता।
- हेपेटोटॉक्सिसिटी के कारण लीवर खराब हो जाता है।
- पीलिया, दिखाई देने वाले श्लेष्म का रंग पीला हो जाता है।
- गैर रंजित त्वचा भाग की लाली और सूजन।
- आंखों में डिस्चार्ज के साथ कान और पलकों में सूजन।
- पुराने मामले में अल्सर विकसित हो सकता है और बैक्टीरिया के आक्रमण से त्वचा की सतह खराब हो सकती है।
- जानवर धूप से बचता है और भोजन करना बंद कर देता है और सुस्त और निर्जलित दिखाई देता है।
- तेज गंध के साथ दस्त और काले रंग का मल।
- गंभीर रूप से जहरीले मवेशियों में 2 दिनों से लेकर कम गंभीर रूप से प्रभावित मवेशियों में 1–3 सप्ताह तक मृत्यु हो सकती है

इलाजः

- पशु को छायादार स्थान पर रखें।
- अंतःशिरा द्रव (DNS/RL) देना चाहिए।
- त्वचा का उपचार एंटीबायोटिक दवाओं के साथ किया जाना चाहिए और एपिक्यूटेनियस इमल्शन लगाया जा सकता है।
- गंभीर मामलों में 20 लीटर इलेक्ट्रोलाइट घोल में 3 किलो सक्रिय चारकोल के साथ मिलाकर पिलाएं। सक्रिय चारकोल एक प्रभावी एंटीडोज है। यदि जानवर में सुधार नहीं होता है तो पहली खुराक के 24 घंटे बाद दूसरी खुराक दी जानी चाहिए।

लैंटाना विषाक्तता से बचाव : हमें अपने चरागाह, बगीचे और खेत को लैंटाना मुक्त रखना चाहिए। हमें यह याद रखने की आवश्यकता है कि लैंटाना की सभी किस्में जहरीली होती हैं और हमें अपने मवेशियों को विशेष रूप से छोटे बछड़े–बछड़ों को लैंटाना के पौधे वाले क्षेत्र से मुक्त रखना चाहिए। यदि हमें संदेह है कि जानवरों ने लैंटाना का सेवन किया है और लैंटाना विषाक्तता के लक्षण नजर आते हैं तो तुरंत पशुचिकित्सक से परामर्श करना चाहिए।

डॉ. महेन्द्र सिंह मील, वेटरनरी कॉलेज, नवानिया, उदयपुर

निदेशक की कलम से...

गोबर-गौमूत्र भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने में सहायक

एक गाय प्रतिदिन औसतन 13–15 लीटर गौमूत्र एवं 20–25 किलो गोबर निष्कासित करती है, केवल 2–5 प्रतिशत गौ अपशिष्ट का ही वैज्ञानिक तरीके से निपटान होता है। पशुपालक भाई गोबर–गौमूत्र को कृषि में खाद् व कीटनाशक के रूप में उपयोग कर इस समस्या से निजात पा सकते हैं। गोबर–गौमूत्र एक सुलभ, सस्ता व सर्वश्रेष्ठ खाद् व उर्वरक है यह प्रकृति का आहार भी है, भूमि की उर्वरा शक्ति को प्राकृतिक स्थिति में बनाएं रखती है। अंधाधुंध रासायनिक खादों व कीटनाशकों का उपयोग करने से भूमि की उर्वरा शक्ति कम हो गई है तथा पर्यावरण संतुलन भी बिगड़ गया है। यह निर्विवाद सत्य है कि रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों के प्रयोग से नष्ट हुई भूमि की उर्वरा शक्ति को गोबर–गौमूत्र से तैयार उत्पाद से ही बढ़ाया जा सकता हैं तथा गोबर–गौमूत्र उपयोग से भूमि के सूक्ष्म जीवाणु भी बढ़ते हैं। गौ–मूत्र को कीटनाशक के रूप में काम में ले सकते हैं। गाय के एक लीटर मूत्र को 40 लीटर पानी में घोलकर खाद्यान्न, दलहन, तिलहन, सब्जी आदि के बीजों को 4–6 घंटे भिगोकर खेत में बिजाई की जाये तो बीज का अंकुरण अच्छा व रोग रहित होता है। 2–3 लीटर गौमूत्र को नीम के पत्तों के साथ 10 लीटर पानी में घोलकर 15 दिन रखने के बाद छानकर एक लीटर दवा को 50 लीटर पानी में घोलकर फसल पर छिड़काव करने पर कीटों को नियंत्रित किया जा सकता है। इसी प्रकार 10 लीटर गौमूत्र में एक किलो सूखी तम्बाकु की पत्तियों को डालकर उसमें 250 ग्राम नीला थोथा घोलकर 20 दिन तक रखते हैं तथा 20 दिन बाद छानकर कीटनाशक के रूप में काम में ले सकते हैं। गोबर–गौमूत्र से तैयार खाद् व कीटनाशक सस्ते होते हैं तथा इन्हें घर पर ही तैयार किया जा सकता है। किसान भाई इसे अपनाकर अपनी आय में वृद्वि कर सकते हैं तथा भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बढ़ा सकते है साथ ही पर्यावरण प्रदूषण को भी कम कर सकते हैं। अतः गौमूत्र जैसे अमृतमय पदार्थ का उपयोग कृषि में करना चाहिए इससे गौवंश की महत्वता और बढेगी तथा इनकी सुरक्षा होगी, साथ ही हमारी कृषि जैविक तथा पर्यावरण संरक्षण की ओर अग्रेषित होगी।राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा गोबर–गौमूत्र प्रसंस्करण पर आत्मा, कृषि विभाग, बीकानेर के सहयोग से प्रशिक्षण आयोजित किये जा रहे हैं जिसमें किसान व पशुपालक भाई भाग लेकर प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं तथा अपनी आय में वृद्वि कर सकते हैं।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

''धीणे री बात्यां''

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/ विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया